विश्लेषण :-

मुगल सत्ता के शिथिल होने से क्षेत्रीय और सामुदायिक शक्तियों ने राजनीतिक शून्य को भर दिया।

→ विदेशी आक्रमण और साम्राज्य की प्रतिष्ठा का ह्रास :-

1. नादिरशाह का आक्रमण (1739) :-
   - नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया।
   - कोहिनूर और मयूर सिंहासन की लूट।
   - मुगल साम्राज्य की सैन्य दुर्बलता उजागर।

2. अहमद शाह अब्दाली :-
   - अहमद शाह दुर्रानी के बार-बार आक्रमण।
   - 1761 का पानीपत का तृतीय युद्ध - मराठों की पराजय।

राजनीतिक प्रभाव :-
- साम्राज्य की आंतरिक प्रतिष्ठा ध्वस्त।
- उत्तर-पश्चिमी सीमाएँ असुरक्षित।

→ दरबारी गुटबाजी और अमीर-उमरावों की राजनीति :-
- तुर्की, ईरानी और हिंदुस्तानी गुटों का संघर्ष।
- सैयद बंधु निजाम-उल-मुल्क आदि का प्रभाव।
- सम्राट कठपुतली बन गया।

परिणाम :-
- प्रशासनिक अस्थिरता
- नीतिगत निरंतरता का अभाव

→ ब्रिटिश हस्तक्षेप और सत्ता का अंत :—

- British East India Company ने बंगाल, अवध और दक्षिण में हस्तक्षेप बढ़ाया।
- 1757 का प्लासी और 1764 का बक्सर युद्ध।
- 1765 में दीवानी अधिकार प्राप्त।

अतः 1857 के विद्रोह के बाद Bahadur Shah Zafar को निर्वासित कर मुगल साम्राज्य का औपचारिक अंत हुआ।

→ प्रमुख राजनीतिक प्रवृत्तियों का सार (Summary of Political Trends) :—

प्रवृत्ति	उदाहरण
केन्द्रीकरण का पतन	साम्राट की वास्तविक शक्ति समाप्त।
प्रांतीय स्वायत्तता	बंगाल, अवध, हैदराबाद का उदय।
क्षेत्रीय शक्तियों का उदय	मराठा, सिख, जाट, रोहिल्ला।
विदेशी आक्रमण	नादिरशाह, अब्दाली
औपनिवेशिक हस्तक्षेप	ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव।

→ इतिहासलेखन (Historiography) :—

- राष्ट्रवादी इतिहासकार इसे जागीरदारी संकट (Jagirdari crisis) से जोड़ते हैं।
- राष्ट्रवादी इतिहासकार इसे "राष्ट्रीय विचार मानते हैं।
- आधुनिक इतिहासकार इसे राजनीतिक पुनर्संरचना (Political Reconfiguration)" मानते हैं।

Scanned with OKEN Scanner